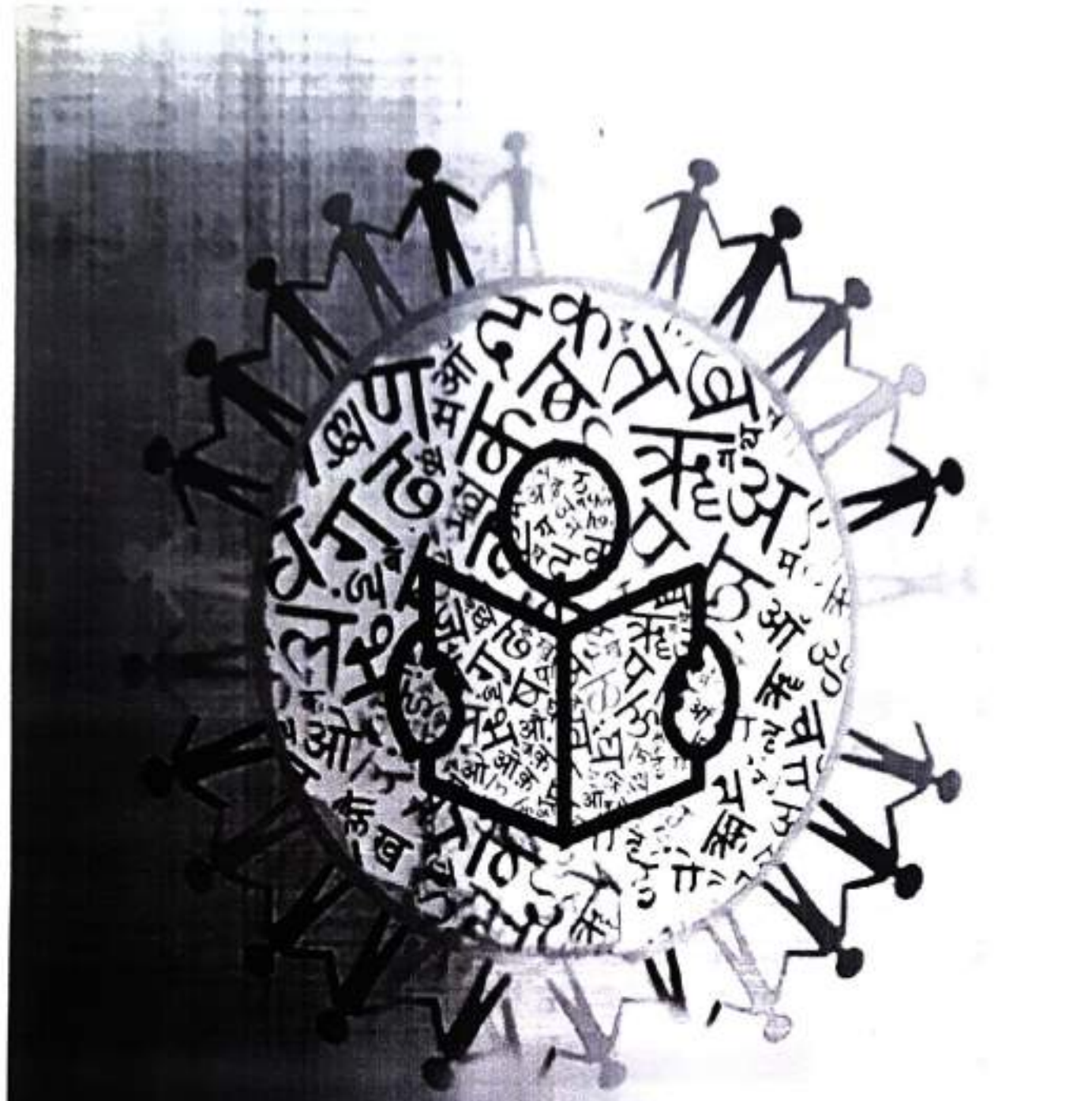

हिंदी साहित्य और भाषा

एक विवेचन

डॉ. [illegible] मदाड, [illegible] नासाहेब जावळे

PRINCIPAL
SAVITRIBAI COLLEGE OF ARTS
Pimpalgaon Pisa, Tal.Shrigonda,
Dist.Ahmednagar

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher and author]

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
आशापुर, सारनाथ, वाराणसी-221 007
मो० : (+91) 9450540654, 8669132434
website : www.abspublications.com
E-mail : abspublication@gmail.com
info@abspublications.com

ISBN 978-93-89908-43-5

© लेखक, प्रकाशक

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : 160.00 रुपये मात्र

आवरण पृष्ठ
शिवम् तिवारी (भारत)

शब्द-संयोजन
शिखा ग्राफिक्स (भारत)

मुद्रक :
अनिका प्रिण्टर्स (भारत)

HINDI SAHITYA AUR BHASHA : EK VIVECHAN

Edited By : Dr. Manohar Jamdade, Dr. Nanasaheb Jawale

Price : One Hundred Sixty Only.

अनुक्रमणिका

❖ प्रकाशकीय
❖ संपादक की ओर से ...
1. 'नाव' कविता में व्यक्त जीवन विषयक चिंतन
– डॉ. राजेंद्र खैरनार 13
2. राष्ट्रीय चेतना की कविता 'देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता'
– डॉ. नानासाहेब जावळे 16
3. त्याग और समर्पण की अनूठी मिसाल 'एकलव्य से संवाद'
– डॉ. शेख ऐनुर. एस. 20
4. स्त्री मुक्ति की चाह 'हॉकी खेलती लड़कियाँ'
- डॉ. मोहम्मद शाकिर शेख 23
5. सामाजिक विषमता पर प्रकाश 'कूड़ा बीनते बच्चे'
– सहा. प्रा. समाधान गांगुर्डे 27
6. सामाजिक न्याय व्यवस्था की पोल खोल 'धरती अब भी घूम रही है'
- डॉ. अनुप इढावी 31
7. आर्थिक संकट के कारण पराजित बने परिवार की कहानी 'दूसरे'
– डॉ. नानासाहेब जावळे 36
8. निर्दोष मध्यमवर्गीय परिवार के यातनामय जीवन पर प्रकाश 'सजा'
– सहा. प्रा. नामदेव शिलोळे 40
9. सामंती सोच पर कड़ा प्रहार 'सलाम'
– डॉ. बेबी कोलते 44
10. फौजी परिवार की संघर्ष गाथा 'छावनी में बेघर'
– सहा. प्रा. अशोक घोरपडे 47
11. हिंदी में कारक व्यवस्था
- डॉ. मधुकर देशमुख 52

12. समोच्चरित भिन्न अर्थ वाले शब्द (शब्द-युग्म)
- डॉ. मनोहर जमदाडे 62
13. संक्षेपण लेखन कौशल
- डॉ. अनंत केदारे 69
14. वर्तमान राजनीति पर व्यंग्य करती कविता 'तीनों बंदर बापू के'
– डॉ. भरत शेणकर 77
15. 'बात-बतंगड़' कविता में व्यंग्य विधान
– सहा. प्रा. रवींद्र ठाकरे 81
16. विद्वानों पर करारा व्यंग्य 'विद्वान लोग'
- सह. प्रा. भारत चव्हाण 86
17. अकाल में उभरी आम आदमी की पीड़ा 'कितनी रोटी'
- डॉ. मनोहर जमदाडे 89
18. भारतीय राजनीति की पोलखोल 'देश के लिए नेता'
- सह. प्रा. अच्युत शिंदे 92
19. खोखली आतिथ्य पर प्रहार 'प्रेम की बिरादरी'
- डॉ. प्रदीप सरवदे 95
20. अफसरी मनोवृत्ति पर करारी चोट 'अफसर'
- डॉ. दीपा कुचेकर 100
21. भ्रष्ट व्यवस्था पर करारा व्यंग्य 'सावधान, हम ईमानदार हैं'
- डॉ. जिभाऊ मोरे 104
22. सत्ता के दुरुपयोग पर प्रकाश डालती कहानी 'मुख्यमंत्री का डंडा'
– डॉ. एकनाथ जाधव 107
23. बुढ़ापे के दयनीय जीवन पर प्रकाश 'झोले'
– सहा. प्रा. अनिल झोळ 111
24. साक्षात्कार लेखन
– सहा. प्रा. नानासाहेब गोफणे 115
25. हिंदी भाषा से संबंधित प्रमुख पुरस्कार
– डॉ. जयराम गाडेकर 124
26. पल्लवन लेखन एक कला अभिव्यक्ति
- डॉ. सारिका [illegible] 132

8.

निर्दोष मध्यमवर्गीय परिवार के यातनामय जीवन पर प्रकाश 'सजा'

मन्नू भंडारी हिंदी की आधुनिक कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में उभरकर आयी है| मन्नू भंडारी का जन्म 30 अप्रैल 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुर नगर में हुआ था| इन्होंने हिंदी साहित्य की गद्य विधा में कहानी और उपन्यास दोनो विधाओं में कलम चलाई है| मन्नू भंडारी का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था| बचपन में उनकी माँ उन्हें 'मन्नू' नाम से बुलाती थी इसी कारण इन्होंने साहित्य लेखन के लिए अपना नाम 'मन्नू' चुना और शादी के बाद भी आप मन्नू भंडारी ही रही| इनके पिता जी सुख संपत राय हिंदी के जाने-माने लेखक थे| उन्होंने हिंदी पारिभाषिक कोश का निर्माण किया था| मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व निर्माण में उनके पिताजी के ही संस्कार थे| मन्नू भंडारी जी के पिताजी ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया था| उन्होंने अपनी लडकियों को रसोई घर जाने से मना किया और शिक्षा को प्राथमिकता दी थी| मन्नू भंडारी ने अपना प्रथम कहानी संग्रह 'मैं हार गई' अपने पिताजी को समर्पित किया था| मन्नू भंडारी की माता का नाम अनुपकुंवरी था| वह उदार, स्नेहिल, सहनशील, धार्मिक स्वभाव की थी| मन्नू भंडारी को दो भाई और दो बहने थी| भाई- प्रसन्न कुमार, बसंत कुमार तथा बहने- स्नेहलता और सुशीला|

मन्नू भंडारी ने हाईस्कूल तक पढ़ाई 'सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल' में की तथा 'अजमेर कॉलेज' से इंटर किया| उन्होंने आगे चलकर एम. ए. तक शिक्षा ली| कॉलेज जीवन में इन्होंने कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था| आगे चलकर आपने सबसे पहले कोलकता के विद्यालय 'बालीगंज शिक्षा सदन' स्कूल में ९ साल तक अध्यापन कार्य किया| 1961 में आप कोलकता के राणी बिरला कॉलेज में प्राध्यापिका बनी| इसके बाद लम्बे समय तक आपने मिरांडा हाउस, दिल्ली में अध्यापन का कार्य किया| बाद में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजक पीठ की अध्यक्षा रही| मन्नू भंडारी ने सन 1959 में हिंदी के प्रसिध्द लेखक राजेंद्र यादव के साथ शादी की, यह अंतर जातीय विवाह था| मन्नू भंडारी बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी| इन्होंने कहानी संग्रह, उपन्यास, नाटक, तथा बाल साहित्य लिखकर हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया है|

मन्नू भंडारी की 'सजा' कहानी 'यही सच है'(1966) कहानी संग्रह की एक चर्चित कहानी है| 'सजा' कहानी के माध्यम से मन्नू भंडारी ने भारतीय समाज के एक इमानदार

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

परिवार का चित्रण किया है| सजा अकेले उस पात्र को नहीं मिलती जिसके ऊपर गलत आरोप है| बल्कि पूरे परिवार को झेलनी पड़ती है| आशा और मुन्नू दो छोटे बच्चों को भी अपने पिताजी पर लगाए गए गलत आरोप की सजा भुगतनी पडती है| आशा छोटी सी बच्ची होते हुए भी एक शांत, समझदार, गंभीर, संवेदनशील एवं स्नेहमयी लडकी है| वह परिवार के सभी सदस्यों के बारे में सोचती है, अपने पापा का कार्ड आने पर वह कहती है, "मेरे और मुन्नू के लिए एक लाईन तक नहीं लिखी थी| न प्यार, न आने के लिए कुछ| पूरे साल में पप्पा का यह पहला कार्ड था और हमारे विषय में कुछ नहीं लिखा, जैसे उन्हें मालूम ही नहीं हो की हम भी यहाँ हैं| क्या पप्पा ने अपने को इतना बदल लिया है? उन्होंने क्या बदल लिया है, शायद समय ने उन्हें बदल दिया है| उन्हें ही क्या, सबको ही बदल दिया| मैं क्या कम बदल गई हूं? मन्नू क्या कम बदला है? पता नहीं; अम्मा की क्या हालत होगी! ओह, इन पाँच सालों में क्या कुछ नहीं हो गया!"[1] इतनी छोटी बच्ची होते हुए भी वह अपने पिताजी के स्वभाव में जो बदलाव आया है, इसका बहुत ही सूक्ष्मता से अंकन करती है| उनका पूरा परिवार मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक रूप से टूट चुका है| स्कूल में आशा को उसकी सहेलिया ताने मारती है तो उसका दिल चूर-चूर होता है| "हाय-हाय, बेचारी के पिता को जेल हो गई|"[2] फिर भी वह उन सहेलियों से कुछ नहीं कहती थी| वह समझती है कि अपने परिवार में पिताजी के अलावा आर्थिक दायित्व निभानेवाला अन्य कोई भी सक्षम सदस्य नहीं है| इसी कारण मैट्रिक के बाद उसकी पढ़ाई नहीं हो पाती|

कान्त मामा विदेश से आने के बाद अपने आपको बहुत समझदार समजने लगे थे| आशा के पिताजी बिना अपराध किए भी अपराधी की तरह सजा भोग रहे हैं| इस पर बाबा और चाचाजी बिघड गए और उन्होंने बाबा की अपील मंजूरी करवा दी| इस पर आशा के मन में जो मनहूसियत छाई हुई थी, वह दूर हो गयी| आशा के मन में इस अपील से उम्मीद जाग गई कि अब हमारे भी अच्छे दिन लौट आएँगें| पर मुन्नू छोटा बच्चा था| वह यह कुछ भी समझता नहीं| किसी भी चिज के लिए वह जिद कर बैठता था| तब आशा उसे समझाते हुए कहती है, "भैय्या, अभी हमारे बुरे ग्रह आए हुए हैं, किसी भी चीज की जिद नहीं करते|"[3] लेकिन मुन्नू यह ग्रह-व्रह कुछ समझता नहीं और वह रोता था|

बाबा की अपील मंजूर होने के बाद आशा के मामा और चाचाजी चले गए | दूसरे दिन मुन्नू को गाँव के स्कूल में डाल देना तय हुआ क्योंकी अब उसकी स्कूल की फीस जुटाना भारी हो गया था| आशा का भी फाईनल साल होने के कारण घर में रखा वरना उसे भी गाँव भेज दिया जाता| मुन्नू के जाने से पप्पा की आंखों से आंसू टपक रहे थे| मुन्नू के गांव जाते ही पूरा घर सूना हो गया| मुन्नू के जाने से बहुत बदलाव हुए| आशा कहती है की "पप्पा अब कुछ-कुछ बोलने लगे थे, पर पहलेवाले पप्पा वह बिल्कुल नहीं रह गए थे| बस सारे दिन चुपचाप लेटे-लेटे कुछ पढते रहते| कभी-कभी गोदी में

Savitribai College of Arts No. PUJANIA/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

तकिया रखकर कुछ लिखते थी। मेरा बड़ा मन होता था कि देखूं, वह क्या लिखते है; पर कभी हिम्मत नहीं हुई।''[4] आशा पापा को समझाना चाहती थी लेकिन उसकी हिम्मत नहीं होती थी इस सबसे वह पापा को बाहर निकालना चाहती थी।

छुट्टियों के दिन में पंखा न होने से दोपहर के वक्त भयंकर गर्मी महसूस होती थी। वह परिवार अपने लिए एक पंखा भी खरीद नहीं सकता था। आगे चलकर हालात इतने गंभीर हो गए की आशा को स्कूल बस भी छोड़ देनी पड़ी। अब उसे तीन मिल तक पैदल ही आना-जाना पड़ता था। पप्पा सस्पेंड होने के बाद बैंक का अकाऊंट खाली हो गया था। नौबत यहाँ तक आई थी की अम्मा के गहने भी बेचने पड़े थे। अम्मा चिड़चिड़ी हो गई थी। परिवार का कोई भी सदस्य एक-दूसरे के साथ हँसकर नहीं बोलता था। एक बार अम्मा ने आशा को पिटा तो पप्पा सिर्फ देखते रहे कुछ भी नहीं बोले। इससे आशा आहत होती है ''अपनी कोठरी में बैठकर मैं घंटों रोई थी। हे भगवान, सब दु:ख दो, पर मेरे पप्पा को पहले जैसा कर दो। वह पहले की ही तरह काम करेंगे तो मैं सब कुछ सह लूँगी।''[5] गलत इल्जाम की सजा यहाँ सिर्फ परिवार प्रमुख ही नहीं भुगत रहा था तो परिवार के सभी सदस्य सजा भुगत रहे थे। सबसे ज्यादा कष्ट बच्चों को भुगतना पड़ रहा था। हरेक सुनवाई के दिन घर के सभी सदस्य बड़ी आशा से न्याय व्यवस्था पर भरोसा रखकर चलते थे कि इस बार कुछ होगा लेकिन उनके हाथ में अगली तारीख के सिवा कुछ भी नहीं आता था, और तारीख भी छ: महिने के बाद की मिलती थी।

परिवार की हालत बद से बदतर होती जा रही थी। विशेषत: आशा के अम्मा की। लेकिन इस परिस्थिति में भी पप्पा परिवार वालों को हौसला देने का प्रयास करते थे। सभी को हिम्मत रखने की बात करते थे। बुरे दिन आते है तो सभी तरफ से आते है। लेकिन ये भी दिन चले जायेंगे। 'भगवान के घर देर हो सकती है, अंधेर नहीं' इस पर उनका पूरा भरोसा है। ऐसी कठिन परिस्थिति में भी आशा ने मैट्रिक का इम्तहान दिया और सेकेंड डिविजन में पास भी हुई। मैट्रिक पास होने के बाद आशा का कॉलेज जाना संभव नहीं था लेकिन यह बात उसने अपने अम्मा को नहीं बताई क्योंकि उसकी तबीयत भी ठीक नहीं थी। आशा अपने चाची के पास रहती थी। वहाँ भी उसे बहुत कुछ सहन करना पड़ा। अपने छोटे भाई के लिए आशा सब कुछ सहती रही। रात दिन काम करके चाची के क्रोध को संभालती रही।

पप्पा को सस्पेंड हुए अब चार साल हो गए थे। इन चार सालो में इस परिवार ने बहुत कुछ सहा था। यहाँ तक कि अपने परिवार वाले सगे लोग भी अब अलग नजरिए से देखने लगे थे। चाचाजी जो पैसे देते थे इसमें भी चाची के कहने से उन्होंने अब कटौती की थी। चाची का व्यवहार भी पहले जैसा नहीं रहा था। वह हमेशा मुन्नू और आशा को कोसती रहती थी। मुन्नू तो अब अपनी चाची के पास जाना भी नहीं चाहता था।

कहानी के अंत में मन्नू भंडारी ने बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। अदालत में जब फैसले का दिन आता है तब घरवालों के सिवा ज्यादा लोग नहीं थे। कानूनी भाषा

में जज साहब ने अंत में सिर्फ इतना ही कहा कि मुजरीम को रिहा किया जाता है| सिर्फ इतना वाक्य सुनने के लिए एक निर्दोष व्यक्ति को कितने साल कोर्ट के चक्कर काटने पडते हैं इसपर भी लेखिका ने प्रकाश डाला है| कोर्ट का फैसाला सुनने के बाद भी आशा के पप्पा के चेहरे पर कोई ज्यादा ख़ुशी नहीं दिखाई देती अभी भी उनका चेहरा भावहीन, निस्तेज, निर्जीव दिखाई देता था| उनकी आंखों को देखकर मानों ऐसा लगता था कि जज साहब की बात उनकी समझ में ही नहीं आयी हो| आशा जब दौडकर पप्पा से चिपकती है, "पप्पा आप बरी हो गए! सुनते हैं, आपको सजा नहीं हुई...... सजा नहीं हुई हैं आपको| पर पप्पा फिर भी वैसे ही रहे, मानों उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा है कि उन्हें सजा नहीं हुई है|"[6] प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मन्नू भंडारी जी ने एक निर्दोष मध्यमवर्गीय परिवार के प्रमुख को जब सजा सुनाई जाती है और अपना निर्दोषित्व साबित करने के लिए उसे कोर्ट के चक्कर काटने पड़ते है तब उसके परिवार को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका वास्तविक चित्रण इस कहानी में किया है|

संदर्भ

१) सजा (यही सच है – कहानी संग्रह), मन्नू भंडारी, पृष्ठ . 57

२) वहीं - पृष्ठ . 58

३) वहीं - पृष्ठ . 58

४) वहीं - पृष्ठ . 60

५) वहीं - पृष्ठ . 62

६) वहीं - पृष्ठ . 64

सहा. प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

सावित्रीबाई कला महाविद्यालय, पिंपळगाव पिसा,

तहसील – श्रीगोंदा, जिला –अहमदनगर, पिन - 413703

ई मेल - ndshitole76@gmail.com

मोबाईल – 9403338513

Savitribai College of Arts * Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar * ID. No. PU/AN/A/ 58/1999

PRINCIPAL
SAVITRIBAI COLLEGE OF ARTS
Pimpalgaon Pisa, Tal.Shrigonda,
Dist.Ahmednagar